तोते रहते तेरह तोते

पी. एम. लाड

मालाबार पैराकीट

इन्हें मदन गोर तोता भी कहते हैं। ये ज़्यादातर पश्चिमी घाट और दक्षिण भारत में दिखते हैं। खासतौर पर केरल और कर्नाटक में। परों और पूँछ पर नीले रंग से इन्हें पहचाना जाता है। ये ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर अपने घोसले बनाते हैं। आम तौर पर ये उड़ते समय ही आवाज़ निकालते हैं।

ये फोटो तमिलनाडु के इन्दिरा गांधी अभयारण्य में खींची गई हैं।

रेड ब्रेस्टिड पैराकीट

हिमालय की तराई से अरुणांचल प्रदेश तक ये नज़र आ जाते हैं। ये बहुत शोर मचाते हैं। नर के गले की काली पट्टी मादा के गले की पट्टी से ज़्यादा चौड़ी होती है। ये ज़्यादातर दूसरे तोतों की तरह ही किसी पेड़, दीवार आदि के छेद में घोंसले बनाते हैं।

उत्तरांचल में रामनगर के पास सीतामड़ी के एक मन्दिर के पास ली गई फोटो।

अरुणांचल प्रदेश का रेड ब्रेस्टिड पैराकीट

रोज़ रिंग्ड पैराकीट

गले में लाल धारी के कारण उसे यह नाम मिला है। इसे सुग्गा के नाम से भी पुकारा जाता है। यह पूरे भारत में पाया जाता है।

आना तोता, जाना तोता

इन लाइनों को जल्दी-जल्दी पाँच बार बोल के दिखाओ।

ज़्यादातर पक्षी अपनी पाचन क्रिया को दुरुस्त रखने के लिए चट्टान, पत्थर खाते हैं। छत्तीसगढ़ में अम्बिकापुर के पास महेन्द्रनगर में कड़ी चट्टान को कुरेदता तोता।

अलेक्ज़ेन्डरीन पैराकीट

इसे आम तौर पर हीरामन या करन तोता कहते हैं। तोतों में यही सबसे ज़्यादा बोलने वाला तोता है। मनुष्यों की बोली की नकल करने के कारण इसे लोग पालते हैं। यह सारे भारत में पाया जाता है।

हैंगिंग पैराकीट

लटकू तोते। ये आम तौर पर दक्षिण भारत में ही दिखते हैं।

केरल में खींची गई लटकू तोते की फोटो।

रायगढ़ में लटकू तोता।।

प्लम हेडिड पैराकीट

इसे टुइंया या ट्यूची तोता भी कहते हैं। यह पूरे भारत में पाया जाता है। इसकी उड़ान सीधी होती तथा अन्य तोतों से तेज़ होती है।

उत्तरांचल में खींची गई फोटो।

स्लेटी हेडिड पैराकीट

आम तौर पर हिमालय की तराई में पाए जाते हैं। यहाँ ये बहुतायत में दिखते हैं। उत्तरांचल में रानीखेत से रामनगर के रास्ते में केले के पेड़ पर अपनी दुम मुँह में दबाए बैठा यह तोता।

अगले अंक में

पंछी आना देस हमारे में
प्रवासी पंछियों से मुलाकात

चित्रः शोभा घारे